जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक

ककसाड़

वर्ष 11 अंक 115
अक्टूबर, 2025
मूल्य : 25/- रुपए

ककसाड़
राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

ISSN 2456-2211

दिल्ली से प्रकाशित

ककसाड़

(जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक)

अक्टूबर 2025 **वर्ष-11 • अंक-115**

संस्थापना वर्ष 2015

प्रबंध एवं परामर्श संपादक
कुसुमलता सिंह

संपादक
डॉ. राजाराम त्रिपाठी

कानूनी सलाहकार
फैसल रिजवी, अपूर्वा त्रिपाठी

•

ग्राफिक डिजाईन
रोहित आनंद

• मुख्य कार्यालय एवं रचनाएँ भेजने का पता •

सी-54 रिट्रीट अपार्टमेंट, 20-आई.पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-110092

फोनः 9968288050, 011-22728461

•

• संपादकीय कार्यालय •

151, डी.एन.के. हर्बल इस्टेट, कोण्डागाँव, छ.ग.-494226

फोनः 9425258105, 07786-242506

ई-मेल : kaksaadeditor@gmail.com
kaksaadoffice@gmail.com

वेबसाइट : www.kaksad.com

मूल्य : **रु. 25** (एक प्रति), वार्षिक : **रु. 350/-** संस्था और पुस्तकालयों के लिए वार्षिक : **रु. 500/-** वार्षिक (विदेश) : **$110** यू.एस. आजीवन व्यक्तिगत : **रु. 3000/-** संस्था : **रु. 5000/-**

संपादन-संचालन पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक

दिल्ली से प्रकाशित होने वाली 'ककसाड़' पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं जिनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं।

• ककसाड़ से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे • **कुसुमलता सिंह** स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक।

अनुक्रम

दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड (संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा पुरस्कृत

4. **संपादकीय**

साक्षात्कार

6. ढिगना कला से ही मैंने चित्रकला सीखी
(युवा गोंड चित्रकार **गायत्री मारावी** से कुसुमलता सिंह की बातचीत)

लेख

8. बस्तर के पारंपरिक लोक आभूषण : **रूद्र नारायण प्राणिग्राही**
11. बस्तर की गोंड समाधियाँ : **विक्रम कुमार सोनी**
13. छायावाद, मुकुटधर पाण्डेय और डॉ. बलदेव साव : **सुशीला साहू**
17. जनजातियों का सामाजिक संगठन : **ए.आर.एन. श्रीवास्तव**
22. रूस के राम...गेनाडी मिखाइलोविच पेचिनकोव : **कुसुमलता सिंह**

कहानी

24. अजनबी रास्ते : **अनिल पुरोहित**
29. इश्क का रंग ग्रे : **डॉ. रंजना जायसवाल**
33. रवानगी : **दीपक शर्मा**

लोक-आस्था

35. लेपचा जनजाति में गरजन पत्थर : **समीर सुब्बा**

कविताएँ/चुने हुए शेर

37. **प्रतीक झा 'ओप्पी'** 37. **महेश कुमार केसरी** 38. **नज़्मसुभाष** **39. डॉ. भावना**

धरोहर

40. कला और जीवन : **पद्मलाल बख्शी**

व्यंग्य

43. गोष्ठियों से पीड़ित : **पूरन सरमा**

लोक-पर्व (विदेशी)

45. हैलोवीन : **कादंबरी मेहरा**

पुस्तक समीक्षा

48. घाघ और उनकी कहावतें : **डॉ. राजकुमार**
49. कारूं का खजाना : **डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ**

लघुकथा

00. झ
28. **कहावतें**
21. **यादें**
34. **पत्र**
36. **क्या है ककसाड़?**
50. साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समाचार

आवरण गोंड कलाकृति - द्वारिका परास्ते
मो. : 9754781409

संपादकीय

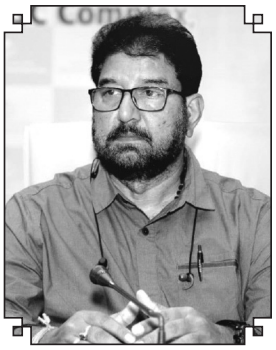

अक्टूबर का अंक आपके हाथों में है। इन दिनों हमारे गाँवों के खेतों की मेड़ों पर जहाँ एक और कास के सफेद फूल आने लगे हैं मानो सफेद कपसीले बादलों के कुछ टुकड़े धान के खेतों पर की मेड़ों पर गिर गए हैं। वहीं हरे कोलंबियाई पन्ने की तरह दपदपाते हरे धान के सपाट खेतों के बीच कहीं कहीं पर धान की बालियाँ सुनहरी चूड़ियाँ पहनने लगी हैं। आकाश में श्वेत कपसीले मेघों का आलस्य धीरे-धीरे विदा ले रहा है, वहीं बीच-बीच में बरस-बरस कर थक हार कर, अगले बरस फिर लौट कर आने के लिए खरामा-खरामा वापस लौटते खाली मानसूनी बादलों के जत्थे भी दिखाई दे जाते हैं।

अक्टूबर मतलब तिथि त्योहारों पर्वों का महीना। हाल ही हमने नवरात्रि पर्व मनाया है।

"या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।"

मार्कंडेय पुराण की 'दुर्गा सप्तशती' का यह श्लोक नवरात्रि के दिनों में मंदिरों से लेकर मंचों तक गूँजता रहा था है। महिला-दिवस हो या किसी सांस्कृतिक आयोजन का अवसर, इन पंक्तियों को मंचों पर भावभीनी गंभीरता से दुहराया जाता है। किंतु सवाल यह है कि क्या इन पंक्तियों का भाव हमारे घर-आँगन में भी उतनी ही श्रद्धा और व्यवहारिकता से उतारा जाता है? देवी की मूर्तियों के सामने तो हम तीन-तीन बार नतमस्तक होते हैं, लेकिन घर की देवियों को स्त्रियों को बराबरी और सुरक्षा देने में हमारा माथा और गर्दन अकसर अकड़ कर सीधी हो जाती है। यही विरोधाभास मुझे सबसे ज्यादा सालता है।

नवरात्रि, नौ रातें! संगीत, नृत्य और आराधना की! गुजरात का गरबा और डांडिया, बंगाल का धाक और धूनी नृत्य, और बस्तर का अपना 'ककसाड़'! जहाँ गाँव के युवक-युवतियाँ पूरी रात नृत्य करते हुए ग्रामदेवी से अपने परिवारों,गांव, खेत-खलिहान, फसलों तथा अपने गाय गोरू पशुधन की वर्ष भर की रक्षा और समृद्धि की प्रार्थना करते हैं। अलग-अलग क्षेत्र में बोली तथा उच्चारणगत भिन्नता के कारण नाम भले ही थोड़ा अलग-अलग प्रतीत हों जैसे ककसाड़, करसाड़, खड़साड़ या कड़साड़, पर भाव एक ही है; सामूहिक नृत्य-संगीत से ईष्ट आराधना का आस्थागत मूल भाव।

विडंबना यह है कि हमारे प्रमुख देवताओं को तो एक दिन ही नसीब होता है, पूरे साल में। जैसे जगतराम जी के लिए बस रामनवमी, कृष्ण भगवान के लिए भी केवल कृष्ण-जन्माष्टमी और बस, देवों के देव महादेव शिव भगवान के लिए भी साल में मात्र एक दिवस महाशिवरात्रि। पर मां दुर्गा जी को पूरे नौ दिन की नवरात्रि! वह भी साल में चार-चार बार। चैत्र नवरात्रि, शारदीय नवरात्रि तथा दो-दो गुप्त नवरात्रि। इसके अलावा काली-पूजा, लक्ष्मी-पूजा, सरस्वती-पूजा, शीतला-पूजा, मावली-पूजा, गौरी-पूजा। कैलेंडर का शायद ही कोई महीना मातृशक्ति की पूजा से खाली हो। फिर भी वास्तविकता देखिए। 2022 की NCRB रिपोर्ट बताती है कि भारत में हर घंटे 51 अपराध महिलाओं के खिलाफ दर्ज होते हैं। प्रतिदिन औसतन 90 बलात्कार, जिनमें से हर चौथी पीड़िता नाबालिग यानी कन्या! ये वही कन्याएं हैं , जिन्हें नवरात्रि की साधना में महाष्टमी के हवन के उपरांत भोजन कराकर, दक्षिणा देकर, जिनकी चरण वंदना कर जिनका आशीर्वाद लिए बिना नवरात्रि की साधना पूरी नहीं मानी जाती।

नारी के प्रति अपराधों में से सबसे बड़ी हिस्सेदारी (31% से अधिक) घरेलू हिंसा और पति अथवा रिश्तेदारों की प्रताड़ना की है। कुल मिलाकर माता की पूजा में चढ़े फूल व नारियलों के ढेर और थाने की डायरी में दर्ज महिलाओं पर अत्याचार,बलात्कारों के चीखते आंकड़े, दोनों मिलकर हमारे समाज की एकदम दोगली तस्वीर पेश करते हैं।

क्या यही हमारा "महान भारतीय सभ्यता मॉडल" है?